अनामिका सिंह

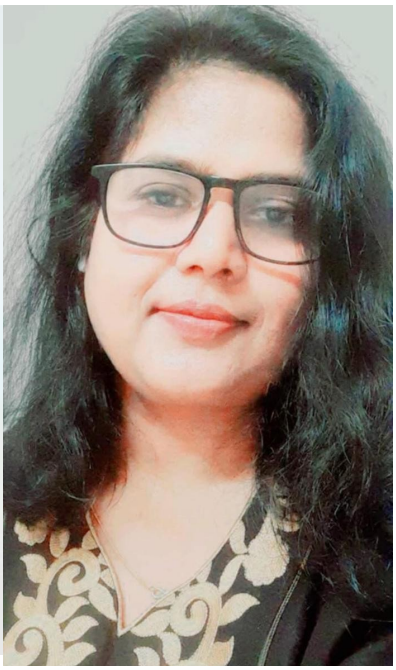

अनामिका सिंह

जन्म तिथि - 09 अक्टूबर 1978

जन्मस्थान -इन्दरगढ़ , जिला कन्नौज

वतर्मान निवास - गणेश नगर , शिकोहाबाद , जिला-फिरोजाबाद

माता — सुश्री देशरानी

पिता — श्री श्रीकृष्ण यादव

शिक्षा -

परास्नातक विज्ञान एवं समाज-शास्त्र, बी.एड., विशिष्ट बी टी सी

अनेक प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में नियमित नवगीत , ग़ज़ल , आलेख प्रकाशित

प्रकाशित कृतियाँ—'न बहुरे लोक के दिन' नवगीत संग्रह (बोधि प्रकाशन -(2021)

'अँधेरा कुछ तो होगा दूर'(नवगीत संग्रह-2024)

उम्मीदों के गीत पंख -(गीत संग्रह)

'अक्षर अक्षर हव्य 'दोहा संग्रह (2024)

ग़ज़ल संग्रह- प्रकाशनाधीन

सम्पादन- 'आलाप' समवेत नवगीत संकलन (2023) शुभदा बुक्स प्रकाशन

' सुरसरि के स्वर' समवेत छंद संकलन , श्वेतवर्णा प्रकाशन (2020)

सम्पादन -'अंतर्नाद' साहित्यिक पत्रिका सह-सम्पादन 'कल्लोलिनी' साहित्यिक पत्रिका

सम्पादक/ संचालक ' कंदील ' समकालीन कविता पर एकाग्र साहित्यिक समूह

लेखन विधा — नवगीत एवं ग़ज़ल , आलेख ,छंद (वार्णिक एवं मात्रिक)

पता -

अनामिका सिंह

स्टेशन रोड गणेश नगर , शिकोहाबाद- जिला —फिरोजाबाद, पिन 283135 (उ.प्र.)

१

इस आस्था के नाम पे क्या-क्या नहीं हुआ।
जो भी हुआ ये जान लें अच्छा नहीं हुआ।

कितने ही आग में जले कितने कुचल मरे,
पर मीडिया ने यह कहा- 'ऐसा नहीं हुआ'।

छह औरतों को रौंद दिया एक कार ने,
लेकिन हुजूम में कोई ज़िन्दा नहीं हुआ।

सिर पर उठाए पोटली जो लोग आ गए
वो जा सकेंगे लौट ये वादा नहीं हुआ।

जो मर गये वो लोग सभी मोक्ष पा गये
ये कहने वालों को ज़रा सदमा नहीं हुआ!

“सब इंतज़ाम कर दिये हैं कुंभ आइए"
कोई भी आपसे बड़ा झूठा नहीं हुआ।

क्या पाप, क्या है पुण्य ये समझे हैं लोग कब
धर्मान्धता के मोल पे घाटा नहीं हुआ।

दरवाज़े खोल हैं दिए लंगर चला रहे
इन्सां इलाहाबाद में उन-सा नहीं हुआ।

२

हम क़दम भी क्यों बढ़ाते राजधानी के लिए।
उम्र जब सारी गँवाई है किसानी के लिए।

ये बुजुर्गों की ज़मीं है ज़िन्दगी से भी अज़ीज,
जान भी हाज़िर हमारी इस निशानी के लिए।

अड़ गए फिर -फिर अड़ेंगे हुक्मरां ये जान लें,
इस धरा पर लहलहाती फ़स्ल धानी के लिए।

इक दफ़ा भी तो न हमने चाँद माँगा है, कहो
हम लड़े हैं तो हमेशा खाद ,पानी के लिए।

शुक्रिया करती हमेशा ही जुबाँ उस वक्त का,
जब मिलीं थीं ये जमीनें ज़िन्दगानी के लिए।

घर हमारे ये हमेशा ही भरे रखती रही,
ज़िन्दगी कम इस जमीं की पासबानी के लिए।

ये जमीनें सिर्फ दौलत ही नहीं हैं इक ‘अना’ है,
बाप-माँ भाई-बहन हैं खानदानी के लिए

३

भीगी आँखें ,आँतें खाली , क्या कहना है सब चंगा ।
दिन धूसर हैं रातें काली क्या कहना है सब चंगा ।

बूढ़ा बरगद ,चलती आरी , देख परिन्दे हैरां हैं ,
सदमे से फिर काँपी डाली,क्या कहना है सब चंगा।

बिटिया,अम्मा ,ताई ,खाला,भाभी ,चाची , दादी तक ,
बारी-बारी खातीं गाली क्या कहना है सब चंगा ।

उस गुलशन की शक्ल-ओ-सूरत के मंज़र क्या खबर बनें ,
मसले कलियों को ख़ुद माली क्या कहना है सब चंगा ।

मंदिर-मस्जिद दोनों हैरां, चंद लोग हैं शर्मिन्दा,
दंगाई हँस पीटें ताली , क्या कहना है सब चंगा ।

मिट्टी , गारा , गिट्टी , तसले , कामगार के सिर पर हैं ,
फिर भी रहती थाली खाली, क्या कहना है सब चंगा ।

दहशतगर्दी के आलम में भूल 'अना ' की सब बातें ,
उल्फ़त भूले , नफरत पाली , क्या कहना है सब चंगा।

४

बदनाम जो गली वहाँ जाते भले हैं लोग।
सुनकर दबाते उँगलियाँ दाँतों तले हैं लोग।

इक शख़्सियत महज़ जिन्हें है देह भर हुई,
किरचें वजूद की हुई क्या मनचले हैं लोग।

जो चुप रहे वे पच गए लेकिन मुखर हैं जो,
वे ही समाज को बड़े अकसर खले हैं लोग।

हालात से दुखी हुए, दुख से बिखर गये,
छत से लटक गए कहीं ज़िंदा जले हैं लोग।

बदलाव के लिए वे जो तनहा ही थे चले
उन बा-कमाल लोगों के पीछे चले हैं लोग।

चलते तिराहे, चौक पे या बोगियों में देख,
रोज़ी की खोज़ में यहाँ कितने गले हैं लोग।

कमरा तो एक ही था मगर जितने भी हुए
इक साथ ही सभी वहाँ खाए-पले हैं लोग।

ढलते ही शाम घर में मिलें सारी लड़कियाँ,
यानी कि साफ है यहाँ कितने भले हैं लोग।

५

चिमनियाँ, तीलियाँ, डोरियाँ चाहिए ।
दाहने, टाँगने बीवियाँ चाहिए ।

सेंकने रोटियाँ अपने घर की तुम्हे ,
सिर्फ़ औरों के घर बेटियाँ चाहिए ।

जो सितम सह के भी बोलती कुछ न हों
बज़्म में वो हसीं तितलियाँ चाहिए ।

हुक्म जो रात-दिन उनका माना करें ,
उनको साथी नहीं दासियाँ चाहिए ।

रोकने को दमन जिस्म और रूह पर
खेलनी फाइनल पारियाँ चाहिए ।

आप इंसान तो हम भी इंसान हैं ,
आत्मसम्मान संग झप्पियाँ चाहिए।

वक़्त रहते ज़ुबां खोल दो लड़कियो!
ज़िन्दगी की हमें चाबियाँ चाहिए।

६

जाहिल हैं, नीच हैं कहें बिल्कुल गँवार हैं।
वामन, अहीर को जहाँ दिखते च मार हैं।

ठाकुर खड़े हैं रास्तों को रोक-रोक कर,
दूल्हे कहीं जो भूल से घोड़ी सवार हैं।

पत्तल उठाएँ और जनावर मरे हुए ,
ये सिर्फ़ और सिर्फ़ सिर्फ़ कामदार हैं।

टोले अलग बसे हैं भले गाँव एक है,
बिटिया के ब्याह में रहे सूने दुआर हैं।

अब आप ये कहेंगे कि अब ऐसा कुछ नहीं,
तो मानिए कि आपके वो ही विचार हैं।

दावे सभी हैं झूठ, सभी झूठ आँकड़े,
सच है ज़मीर हम सभी के दागदार हैं।

तुझको मिलेगी दाद नहीं, है ये तय 'अना',
सच और उसपे तुर्रा ये तीखे अश'आर हैं।

७

मौसम की बेवफाई का ऐसा असर चढ़ा
पत्तों को पीलिया हुआ, फूलों को ज्वर चढ़ा

उतरा नहीं जो गोद से माँ की कभी वही
बेटा मजूर बन है कई फीट पर चढ़ा

दंगे हुए तो क्या हुआ, कुछ लोग मर गये
कुछ का महज है आग की ही भेंट घर चढ़ा

जूते भी घिस गये हैं जँवाई की खोज में
बेटी का बाप बिन रुके है इतने दर चढ़ा

है इक किताब ज़िंदगी इसमें न दाग़ हों
यानी कि बात साफ है अच्छा कवर चढ़ा

रंग-ए-वफ़ा तू घोल ले ऐसा इस इश्क़ में
उतरे नहीं वो उम्र भर हम पर अगर चढ़ा

इसमें गुज़र-बसर नहीं आसान है 'अना'
ये जग तो है करेला कोई नीम पर चढ़ा

८

बीते पलों के फिर वही मौसम नहीं हुए।
तुम भी नहीं हुए तो कभी हम नहीं हुए।

कितनी कलाइयाँ कटीं कितने टँगे मिले,
बेरोज़गार फिर भी यहाँ कम नहीं हुए।

गांधी, सुभाष और भगत को पढ़ा मगर,
उनकी तरह तो आज तलक हम नहीं हुए।

औरत पे ही तमाम लगीं बंदिशें वहाँ ,
आदम के भेष में जहाँ आदम नहीं हुए।

कितने ही गीत और ग़ज़ल कह चुके सभी,
आलोचकों की आँख में ऑसम नहीं हुए।

चूल्हों में झोंक दी गई ज़िंदा ही औरतें,
शौहर हुए जहाँ, कभी हमदम नहीं हुए।

कितनी उदास हो के उठी होंगी सब ‘अना’,
लाशें वो जिन पे ठीक से मातम नहीं हुए।

९

सैलून में खड़ीं जो सुबह-शाम लड़कियाँ
दिनभर में कितने करती हैं वो काम लड़कियाँ

हर कस्टमर को डील करे हैं वे जूझकर
पातीं नहीं हैं दो घड़ी आराम लड़कियाँ

हेयर कटिंग करे कोई तो कोई फेशियल
चमका रहीं हैं हर किसी का चाम लड़कियाँ

आई-ब्रो पे थ्रेड का तो ज़रा देखिए हुनर
देती हैं शक्ल को नये आयाम लड़कियाँ

मेंहदी रचा रहीं हैं दुल्हनों के ध्यानमग्न
साधक हैं,साधना को दें अंजाम लड़कियाँ

नाखून, पाँव, एड़ियाँ धोतीं रगड़-रगड़
टिप में न कुछ भी पातीं हैं ईनाम लड़कियाँ

लाती हैं लंच घर से मगर खा नहीं सकें
कर देतीं हैं सुबह से यूँ दिन,शाम लड़कियाँ

हो सोफ़िया सलोनी ही हो या हो आबिदा
करतीं न भेद देख मोनोग्राम लड़कियाँ

ये लकड़ियाँ नहीं हैं, हैं ये लड़कियाँ 'अना'
घर को चलाया करती हैं गुलफ़ाम लड़कियाँ

१०

जो चंद लोग इन दिनों काफ़ी ख़बर में हैं।
किनकी लगी हैं जैक ये सबकी नज़र में हैं।

करते थे मंच से अमन की बात रहनुमा,
पाए गए वही यहाँ शामिल गदर में हैं।

जो बात कुछ ग़ज़ल में नहीं है तो क्या हुआ,
वो चैन में हैं शेर तो उनके बहर में हैं।

अस्सी बरस की हों गई उनका नहीं है घर,
सो साफ़ है कि औरतें कितनी कदर में हैं।

है बात मेरे दोस्तो कितनी नज़र-नवाज़,
मंज़र-सी नेक सीरतें मेरे शहर में हैं।

कितनी अजीब बात है गाज़ा धुआँ-धुआँ,
हमको न कुछ हुआ वहाँ साँसें कहर में हैं।

अब तक हुआ नहीं है बता क्लीन इंडिया,
कितनी ही पीढ़ियाँ 'अना' उतरीं गटर में हैं।

११

हर तरफ नफ़रत के लेकर लोग परचम आ गए।
कब न जाने किस तरह इस मोड़ पर हम आ गए।

कर दिया सबको जुदा गहरी सियासत हो गई,
मज़हबों के दरमियाँ गर्मी के मौसम आ गए।

रास्ते सारे खुलेंगे हाय तौबा मत करो,
सब बदल डालेंगे गर कुर्सी तलक हम आ गये।

राहतों के नाम पर बेचैनियाँ ही जब मिलीं,
आँख रोयी झोपड़ी की इस कदर ग़म आ गए।

कुछ न थे मतभेद लेकिन फिर वहाँ आए चुनाव,
और फिर दंगे हुए, नफरत के मौसम आ गए।

मीठी बातें, नत थीं गर्दन लीडरों की कल तलक,
लाल बत्ती मिल गयी,वादों में फिर खम आ गए।

१२

नसीबों की हुई चर्चा जहाँ भी बात आयी
किसी के हिस्से दिन आया किसी के रात आयी

कभी जो भूल से होंठों पे हक़ की बात आयी
हथेली की दो गालों पर छपी सौगात आयी

कठिन ही था उसे जब प्यास लेकर और जीना
घड़े और आदमी के बीच फिर-फिर जात आयी

मुहब्बत किस तरह परवान चढ़ती ऐ ज़माने!
कहीं मज़हब कहीं भौंहें सिकोड़े जात आयी

निवालों पर न रोज़ी पर हुई चर्चा अभी तक
मगर नागा बिना हाकिम के मन की बात आयी

जहाँ तुम भी न आये थे, जहाँ हम भी न आए
वहाँ पर भी हुए हैं दिन, वहाँ भी रात आयी

१३

घर ईट-ईट बँट गया, दालान बँट गया
लो माँ के साथ -साथ ये सामान बँट गया

कट बँट गए दरख़्त कभी छाँव थे किए
तुलसी बँटी औ' काँच का गुलदान बँट गया

खेले थे एक साथ कभी माँ की गोद में
फिर साथ खेलने का वो इम्कान बँट गया

दो ख़ुश्क बूढ़ी आँखें भी बेबस हो बह चलीं
चूल्हा-कड़ाही बँट गए धन-धान बँट गया

दहलीज़ शर्मशार थी दीवार जब उठी
आया हुआ नसीब से मेहमान बँट गया

वालिद मरे तो सोग में है मर्सिया पढ़ा
मय्यत उठी जहाँ से वो दीवान बँट गया

ता उम्र ये रहीं हैं 'अना' बंद खिड़कियाँ
सो यूँ सुबह के इत्र का एहसान बँट गया

१४

बाँटने का एक ही था जो सबब, अब देखिए।
आदमी के बीच में आया वो मज़हब, देखिए।

देखिए मज़हब को लाकर आदमी के बीच में
फिर मदारी और बंदर जैसे करतब देखिए

ख़ूब करतब कर रहा जो रस्सियों पर झूलकर
लड़खड़ाएँ पाँव उसके कब, मरे कब देखिए

वो मरें कब देखिए जो रोज़ ही हैं मर रहे
छीनती है मौत साँसें कौनसे ढब, देखिए

कौनसे ढब से रहे औरत यहाँ, कैसे बचे
हो गये घर, रोड, ऑफिस रेप के हब देखिए

रेप के हब देखिए अब बन गये हैं हर जगह
पोत लो कालिख 'अना', हैं मौन नायब, देखिए

१५

बातों की बात हो भले तो है ये बात और
पर रात को न दिन कहें और दिन को रात और

हमको लपेटने को तेरी सारी कोशिशें
कम हैं अभी कि जाके ज़रा सूत कात और

डाली ने हौसला दिया पतझड़ में पेड़ को
मत हो उदास आएँगे ख़ुशियों के पात और

हमको हँसाने और रुला पाने के कमाल
बस दोस्तों के हाथ हैं,किसकी बिसात और

ख़ाली पतीली देख तब आँसू ढुलक पड़े
बच्चों ने कहा माँ को परस थोड़ा भात और

वो है सुकून, नींद वो और वो ही ज़िंदगी
इक शख्स बाकमाल है किसमें ये बात और

कितने ही रंग आदमी के हैं यहाँ 'अना'
सारे दिखा दिए कि बचे कुछ हयात! और

१६

रातों की नींदे खोती है एक ग़ज़ल
यारो तब जाकर होती है एक ग़ज़ल

ऊला, सानी, बहर, काफिए हों आला
ज़िम्मेदारी हर ढोती है एक ग़ज़ल

हँसते हैं जब लोग लगा बस्ती में आग
हर मिसरे पर तब रोती है एक ग़ज़ल

भाईचारा जब हो वेंटिलेटर पर
ऐसे में उल्फत बोती है एक ग़ज़ल

भूख, बेबसी, बदहाली पे बात करे
यानी कि सच्चा मोती है एक ग़ज़ल

सरोकार की बात करे, वो साधारण
ऐसा सुन आपा खोती है एक ग़ज़ल

घोस्ट राइटर हों या अफलातून क्रिटिक
ओवररेट 'अना' धोती है एक ग़ज़ल

१७

जो कर रहे सवाल वे हैं सब रडार पर
हम आ गये हैं देख लो कैसे कगार पर

संगीन ज़ुर्म होते रहे जिसपे ही सदा
फोड़े गये हैं ठीकरे उसके कपार पर

जीते जी रो सकी न है अश्लील हर वो आँख
फिर झूठ-मूठ रोये जो जाकर मजार पर

बूँदें बिखर के भी ये बड़ा काम कर गयीं
रख दी तपी ज़मीन की सूरत सँवारकर

हमको लगा था होगा वो पक्का ज़ुबान का
अफ़सोस! वो भी आ गया चेहरा उतारकर

आँखें कभी जो हो गयीं नम फ्लैशबैक से
यादें हैं आ गिरीं मेरे मन के कछार पर

रोटी, ज़मीन, नौकरी सबकुछ निगल लिया
सत्तानशीन लेते नहीं हैं डकार पर

हासिल किसी को है यहाँ भरपूर तामझाम
कुछ जी रहे हैं आज भी रोटी-अचार पर

कोई तड़प रहा भी हो तो वीडियो बने
सम्वेदनाएँ मौन हैं क्यों चीत्कार पर

१८

कुछ चीड़ हैं खड़े यहाँ कुछ देवदार हैं
अगवानी के लिए कई ऊँचे चिनार हैं

ये घाटियाँ धुआँ-धुआँ, हैं मोड़, मोड़ पर
हरियालियों में पल रहे क़िस्से हज़ार हैं

पत्थर हैं कितने राह में, घोड़ों को है पता
उन पर नहीं असर कि जो इन पर सवार हैं

अपने ही आप में जो थी, जानी मगर नहीं
इक शय 'ख़ुशी' के वास्ते लंबी कतार हैं

ओढ़े है ख़ूबसूरती सारी ज़मीन ये
आदम ही ढो रहे मगर आदम का भार हैं

गेंदे, गुलाब की तरह हैं सीरतें ग़ज़ब
कुदरत की गोद में पलीं पाई दुलार हैं

तू ही 'अना' मुरीद नहीं घाटियों की है
नीरज के भी तो पड़ते क़दम बार-बार हैं

१९

सब ही ईमानदार हैं तो बेईमान कौन
ये जानने को इक करे दुनिया जहान कौन

इसमें छिपाने की है भला बात क्या बता
मत दे सफाई है पता कि किसकी जान कौन

जो देखते हैं ध्यान से हर ज़ुल्म, हर सितम
वो सोचते हैं बेवजह खोले ज़ुबान कौन

हम रस्सियों पे झूल गये ज़िंदगी से हार
तो हौसले के नाम पे देगा बयान कौन

पंखों को टोह रोज़ नए हौसले के साथ
देखें कि रोक पाता है तेरी उड़ान कौन

सुख-दुख रहे हैं साथ ही जीवन में इस तरह
पकड़े हुए पता नहीं किसकी कमान कौन

होगी वजह कुछ और भी मन में दबी हुई
रखता है दोस्तों का भला इतना ध्यान कौन

वो आग और हवा का भी रिश्ता तलाश लें
ढूँढें तो मिल ही जाएँगे उनसे महान कौन।

हर कोई दूसरों की तरह चाहे दीखना
होना है चाहता 'अना' अपने समान कौन

२०

जो कर रहे सवाल वे हैं सब रडार पर
हम आ गये हैं देख लो कैसे कगार पर

संगीन ज़ुर्म होते रहे जिसपे ही सदा
फोड़े गये हैं ठीकरे उसके कपार पर

जीते जी रो सकी न है अश्लील हर वो आँख
फिर झूठ-मूठ रोये जो जाकर मजार पर

बूँदें बिखर के भी ये बड़ा काम कर गयीं
रख दी तपी ज़मीन की सूरत सँवारकर

हमको लगा था होगा वो पक्का ज़ुबान का
अफ़सोस! वो भी आ गया चेहरा उतारकर

आँखें कभी जो हो गयीं नम फ्लैशबैक से
यादें हैं आ गिरीं मेरे मन के कछार पर

रोटी, ज़मीन, नौकरी सबकुछ निगल लिया
सत्तानशीन लेते नहीं हैं डकार पर

हासिल किसी को है यहाँ भरपूर तामझाम
कुछ जी रहे हैं आज भी रोटी-अचार पर

कोई तड़प रहा भी हो तो वीडियो बने
सम्वेदनाएँ मौन हैं क्यों चीत्कार पर

२१

पाल लिया है मन में क्या-क्या और वो बैरी हो बैठे
एक कोख के जने हुए हैं, मुँह फेरे हैं जो बैठे

कितनी कोशिश करके देखी फिर भी एक न समझा मन
जब रोना हो हँसता है, जब हँसना हो तो रो बैठे

प्यार-व्यार और अपनेपन की सबको बहुत ज़रूरत थी
लेकिन सोच-समझ वाले तो हिंसा-नफ़रत बो बैठे

मिला 'निकाला' बेटी को जो लौट के फिर घर को आई
गले लगाओ, बाँहों में लो, ऐसा भी क्या रो बैठे

जिस नदिया की मंशा है सब ही को जीवन देने की
उसमें कचरा तन और मन का हम पाखण्डी धो बैठे

और अदाकारी हमसे उन लोगों की क्या है चलनी
वे जो अपने फन से हमको हैं पहले ही खो बैठे

चाहत के पन्नों पर क्यूँकर नाम किसी दूजे का हो
'अना' इश्क़ में डूब गये हम और उसी के हो बैठे